(1)

Lecture No. (2)

Name of the College - A.P.S.M. College, Barauni, Begusarai
L.N.M.U. Darbhanga
Name - Dr. Bharti Kumari (G.T)
Deptt - A.I. H.&C

Lession Plan - B.A Part III A.I.H.&.C. V

Topic - (Describe the features of the coins of Youdheyas)

Date - 11-06-2021

यौधेय गणराज्य के सिक्के — प्रयाग प्रशस्ति में गणराज्यों की तालिका मिलती है। इसमें यौधेय गणराज्य भी एक है। गणराज्य उत्तरी - पश्चिमी भारत में था। जूनागढ़ अभिलेख में इनकी गणना वीर क्षत्रियों के रूप में की गई है। अभिलेख 150 ई. का है, क्योंकि यही रुद्रदामन का समय था। यौधेय ने आर्जुनायन तथा कुणिन्दों के साथ मिलकर कुषाणों का अन्त करने के लिए संघ का निर्माण किया था।

ऐसी संभावना है कि कुषाणों के समय इन्होंने उत्तरी पश्चिमी प्रान्तों को छोड़कर राजपूताना में अपना अधिकार किया हो। इस तथ्य का ज्ञान कुषाण सिक्कों से होता है, क्योंकि कुषाणों के सिक्के यमुना तथा सतलज के बीच के स्थानों में मिलते हैं। अन्तिम कुषाणों के सिक्के वहीं न मिलकर यौधेयों के सिक्के मिलते हैं।

यौधेयों के सिक्कों के अंश —

(1) कार्तिकेय की आकृति

(II) इन पर द्वितीय शब्द अंकित है।

अल्तेकर का मत है कि — 'द्वि' अथवा 'त्रि' है या तीन गणराज्यों संघों का द्योतक है। इन्होंने किसानों के खिलाफ मिलकर लड़ने के लिए संघ बनाया था। इनका अस्तित्व ईसा पूर्व 500 वर्ष पूर्व ज्ञात होता है।

Scanned with CamScanner

इनका उल्लेख पाणिनि की अष्टाध्यायी में भी किया गया है। इन्हें उसमें आयुध जीवी संघ बताया गया है। मौर्यकाल में ये मौर्यों के अधीन थे। आगे चलकर इनकी अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित हुई। इन लोगों के अनेक सिक्के ताँबे के मिले हैं। इन सिक्कों पर 'यौधेय गणस्य जयः' तथा 'यौधेयानां बहुधान्यकानां' अंकित है। अल्टेकर का कहना है कि महाभारत का 'मत्तमयूरक' जो कि रोहतक के रहने वाले थे आगे चलकर यौधेय कहे गये। ये लोग मधवलपुर राज्य के पड़ोसी थे। भरतपुर से यौधेयों का एक लेख मिला है। इस अभिलेख में यौधेयों के अधिपति को —

'महाराज महासेनापति'

की उपाधि से सम्बोधित किया गया है। इस प्रकार इनकी स्थिति सतलज नदी के किनारे भरतपुर के आस-पास में थी। राजस्थान के जोहियावार राजपूत संभवतः उन्हीं के वंशज हैं।

यौधेयों के सिक्के का विस्तार — यौधेयों के सिक्के निम्नांकित स्थानों से उपलब्ध हैं — (1) सतलज और यमुना नदियों के बीच में (2) रोहतक प्रदेश (3) पंजाब आदि (4) देहरादून (3) लुधियाना (4) दिल्ली (5) गढ़वाल (6) कांगड़ा आदि स्थानों में मिलते हैं। निर्माण की दृष्टि से यौधेय सिक्कों का विभाजन इनका विभाजन निम्न प्रकार किया जा सकता है (1) ढले ताँबे के जो कि कुणिन्द तथा औदुम्बर आदि गणराज्यों के सिक्कों की तरह है।
(2) ताँबे के बड़े-सिक्के जिनके रूप और बनावट पर कुषाण सिक्कों का स्पष्ट प्रभाव है